19/7/21

B.A. + B.Sc.
Part I
मैथिली रचना
कविता काल

डॉ० अमरनाथ कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस० एन० सिन्हा कॉलेज,
औरंगाबाद

विद्यापति — अभिसार. —

विरोधियों के साथ विष है वाणी, बाण काली, मालिनी की डराती है। उधर वाणी आकर्षती है मोर पलकें अवकाती है। विद्यापति की नायिका तो दुःख को भोगा नहीं पाती है —

कामिनि हे हमर दुखक नहि ओर।
हमर बादर नाह आदिन, सून मन्दिर मोर।
झंझि घन गरजंति संतत
भुवन भरि बरसंतिया।
कन्त पाहुन काम दारुण
मारल हमर हरिया।

विद्यापति की नायिका को [illegible] दुःख का भोग
[illegible]
गहने, श्रृंगार आदि भार स्वरूप हो गये हैं —

चानन भेल विषम सर रे
भूषण भेल भारी।
कपूर पइर नहि आओत रे
होइत कोकिल मारी॥

विद्यापति की नायिकी का अभिसार श्रृंगार के साथ-साथ आंधी पर भी सवार करती है। इन्होंने अपनी पदों में राधा कृष्ण की केलि-क्रीड़ाओं तथा इनकी लीलाओं का अमित अंकन किया है। जिस समय बंगाल में चैतन्य महाप्रभु का आविर्भाव हुआ था उस समय इन्होंने कोकिल की भाँति स्वर मिलाते काकली मिलाया की गली-गली को स्वरालोकित कर बंगाल के कृषकों एवं मजदूरों को गुंजा दी थी। चैतन्य के कानों में जब इनकी अमृतधार बरसाने पड़ी तो वे मंत्रमुग्ध हो गये। विद्यापति के पद से बलैया-बलैया कर गाने लगे। चैतन्य देव इनके पद गाते-गाते प्रेमावेश में अपनी चेतना खो देते थे।